380 P
275
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
13776/10/21
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 275

Re

17-1

भजन चर्खा व झंडा

संग्रहकर्ता—पं० सियाराम शरण मिश्र गौरा निवासी

प्रकाशक—छाँगुर त्रिपाठी स्वदेशी बुकडपो बरहज बाजार जि० गोरखपुर।

प्रकाशक के आज्ञानुसार गोरखपुर प्रिन्टिङ्ग प्रेस में मुद्रित।

प्रथमवार २०००] १९३० [मूल्य)॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 271
Date 6.12.77
GOVT. OF INDIA

IMPERIAL
RECEIVED.
30 MAR. 1931
DEPARTMENT

❀ बन्देमातरम् ❀

भजन चरखा व झंडा।

—❀—(०)—❀—

❀ प्रार्थना ❀

परतंत्रता का पर्दा अब तो उठा दे मोहन ॥
स्वाधीनता का दर्शन अब तो करा दे मोहन ॥ १ ॥
आत्मा अमर है सब को गीता का ज्ञान दे दे ॥
बलिदान की पहेली सब को सिखादे मोहन ॥ २ ॥
राष्ट्रीयता सबो के रंग २ में व्याप जावे ॥
चमड़ा बिभेदा रंग का झटपट हटादे मोहन ॥ ३ ॥
दुखकी मेरी कहानी पदमों गुजर चुकी है ॥
गोरों की आफतों से आकर बचा दे मोहन ॥ ४ ॥
हम चाहते वहीं हैं हमको जो चाहिये था ॥
पूरण स्वतंत्रता का जलसा दिखा दे मोहन ॥ ५ ॥
आलस्य, मोह, मत्सर पोखंड दूर करदे ॥
अस्पृश्यता का "जीवन" सुख मयबना दे मोहन॥६॥
कैसी बुरी बला है परतंत्रता बता दे ॥
कैसे "स्वराज्य" होगा "लेकचर" सुना दे मो० ॥७॥

छाँगुर त्रिपाठी

बिरहा ।

किड़ बिड़ बिड़ बिड बाक धिन्ना
बाजेला नगारा ।
गांधीजी का चर्खा चले
देश हो सुधारा ॥

ठइयाँ भुइयां देवी देवता सब के मानाई ।
पइयां परी रउरे गनेश जी गोसाईं ॥
देश के बिदेशिया के पंजा से छोड़ाई ।
देईं आशीरवाद हमनीं चरखा चलाई ॥
॥ किड० ॥

जग में अरब डेढ़ नर तन धारी ।
पचहत्तर करोड़ पहिरें चाफ़ता किनारी ॥
बाकी हैं पच्चास आधा देहियाँ उघारी ।
पच्चीस करोड़ नंगा रहें नर नारी ॥
॥ किड़० ॥

तैतिस कोटि लोग हमनीं देश में कहाईला ।
तन ढाँके तक के न कपड़ा बनाईला ॥
बीस लाख गाँठ रुई बाहर में भेजाईला ।
छ गुन्ना मुनाफा देके उलटे बेसाहीला ॥
॥ किड़० ॥

साढ़े सात लाख गाँवा देश भर में भाई ।
दश२ आदिमी करे लगे चर्खा का कताई ॥
बावन लाख हैं साधू बाबा कर्म न कमाई ।

देते उपदेश करते मुलुक भलाई ॥

॥ किड़० ॥

छोट मुलुक फिरंगिया बसे करोड़ चारी ।
दुनियाँ में फैलल बाटे ओकर अमलदारी ॥
पुलिस राखे हाकिमराखे औरी करमचारी ।
मूलूक भरिके कपड़ो क करेला तयारी ॥

॥ किड़० ॥

सूत काती सुतवा क कपड़ा बनाईं ।
अपने पहिरबों करीं सब के पहिराईं ॥
पचहत्तर करोंड़ रुपया देश के बचाईं ।
चरखा चलाई भाले आदमी कहाईं ॥

॥ किड़० ॥

शरम करीं डूब मरी हिन्दुस्तानी होके ।
कोढ़ी होके बैठल बाड़ी गून ढंग खोके ॥
दूइ घड़ी दीन ले उठीला रौरे सोके ।
देश में विदेशी क प्रचार कैसे रोके ॥

॥ किड़० ॥

❋ राष्ट्रीय झन्डा ❋

बिजयी बिश्व तिरङ्गा प्यारा, झन्डा ऊचा रहे हमारा ।
सदा शक्ति सरसाने वाला, प्रेम-सुधा बरसाने वाला ॥
बीरों को हरषाने वाला-मातृ भूमि का तन मन सारा ॥झण्डा॥
स्वतन्त्रता के भीषण रण में—लख कर बढ़े जोस क्षण २ में
कापें शत्रू देख कर मन में-मिट जावे भय संकट सारा ॥झण्डा॥

इस झन्डे के नीचे निर्भय—लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय
बोलो भारत माता की जय—स्वन्त्रता है ध्येय हमारा ॥झन्डा॥
आओ प्यारे बीरों आओ—देश धर्म पर बलि बलि जाओ
एक साथ सब मिल कर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा ॥ झन्डा॥
इसकी शान न जाने पाये—चाहे जान भलेही जाये ।
बिश्व मुग्ध करके दिखलाये—तब होवे प्रण पूर्ण हमारा॥झ०॥

इन गाँधी टोपी वालों ने

इक लहर चलादी भारत में, इन गाँधी टोपी वालों ने ।
"स्वाधीन" बनो यह सिखा दिया, इन गांधी टोपी वालों ने ॥
सदियों की गुलामी में फँसकर, अपने को भी जो भूलचुके ।
कर दिया सचेत उन्हें अबतो, इन गाँधी टोपी वालों ने ॥
सर्वस्व देशहित करदो तुम अर्पण सुत हो माता के ।
सर्वस्व त्याग का मंत्रदिया, इन गाँधी टोपी वालों ने ॥
अनहित में भारत माता के जो लगे रहें द्रोही बनकर ॥
उनको सत्पथ पर चला दिया, इन गांधी टीपी वालों ने ।
पट बंद हुए कितनी मिलके, लंका शायर भी चीख उठा ।
चर्खे सा चक्र चलाया जब, इन गाँधी टोपी वालों ने ॥
रोते हैं विदेशी व्यापारी, अपना सिर धुन बिलबिलाते हैं ।
खद्दर से प्रेम किया जबसे, इन गाँधी टोपी वालों ने ॥

आदर्श जो हैं इस भारत के, दीनोके प्राण पियारे हैं।
नेता गाँधी को बना लिया इन गाँधी टोपी वालों ने ॥
अब मेल करो आपस में तुम, जंजीर गुलामी की तोड़ो।
माना गाँधी का कहना यह इन गाँधी टोपा वालों ने ॥
है बिकट समस्या तीस कीभी उसको भी हल करनाहोगा।
जरिया बस एक निकाल लिया इन गाँधी टोपी वाले ने ॥
युवकों के हृदय दुलारे हैं आखों के प्यारे तारे हैं।
चुन लिया जवाहिर को राजा इन गाँधी टोपी वालों ने ॥
खुश हुआ दग्ध यह सुन करके स्वाधीन बनेगा भारत यह।
विश्वास दिलाया ऐसाही इन गांधी टोपी वालों ने ॥

(विष्णु मित्र विद्यार्थी दग्ध)

वीर जवाहिर ने

भारत का डंका आलम में, बजवाया बीर जवाहर ने।
स्वाधीन बनो स्वाधीन बनो, समझाया बीर जबाहर ने॥ १॥
वह लाल जी मोतीलाल का है, है लाल दुलारा भारत का।
सोते भारत को हठ करके जगवाया वीर जवाहर ने ॥ २॥
अंगरेजों की मृग तृष्णा में भूले थे भारत बासी सब।
पूरी आज़ादी का मंतर सिखलाया वीर जवाहर ने ॥ ३॥
दे दे स्पीचें जिन्दा दिल कमजोरी दूर भगादी सब।

रग रग में खूँ आज़ादी का दौड़ाया बीर जवाहर ने ॥ ४ ॥
खोटी है राज नीति उसने छानी है खाक़ बिदेशों की ॥
समता स्वतंत्रता का मारग दिखलाया वीर जवाहर ने ॥५॥
पूंजी पति ज़मादार करते हैं ज़ुल्म मजूर किसानों पर ॥
बन साथी दीनों का धीरज बँध वाया वीर जवाहर ने ॥६॥
हिन्दू मुसलिम, सिख, जैन, इसा—ई, पारसी, भाई भाई हैं ॥
सब ऊंच नीच का भेद भाव मिटवाया वीर जवाहर ने ॥७॥
इक रोशन आग धधकी है आज़ादी की उसके दिल में ॥
जिससे युवकों का मुर्दा दिल चमकाया वीर जवाहर ने ॥८॥
नव युवक करोड़ों भारत के भूले थे भोग बिलासों में ॥
युवकों की शक्ती को एकदम चमकाया वीर जवाहर ने ॥९॥
आदर्श चरित से वह अपने युवकों का है सम्राट बना ॥
आज़ादी का ऊंचा झंडा लहराया बीर जवाहर ने ॥ १० ॥
बिजली है वाणी में उसकी, जादू है आँखों में उसकी ॥
देखा जिसको इक पल भर में, अपनाया बीर जवाहर ने ॥
गांधी जब आशिष दे बोले "खुद क्लर्क बनूँगा मैं तेरा"
तब सेहराराष्ट पतीका सिर बंधवाया वीरजवाहर ने ॥२२॥
लखकर "प्रकाश" अब भारत का अचरज मेंडूबी है दुनिया ॥
काँग्रेस को करके मुट्टी में मुसकाया बीर जवाहर ने ॥ २३

(कवि प्रकाश)॥

॥ आजाद करेंगे ॥

ग़ज़ल

हँस हँस के हमी हिन्द की इमदाद करेंगे ।
नाशाद बिरादर को हमीं शाद करेंगे ॥
है ख़ोफ हमें मौत का मुतलक़ न जहां में ।
फिर क्या वह सितम बानिये बेदाद करेंगे॥
मुंह बन्द किया, कैद किया, खून बहाया ।
अब और सितम कौन सा ईजाद करेंगे ॥
हाकिम हो वही और अदालत हो उसीकी ।
हम ऐसी न सरकार से फरियाद करेंगे ॥
माफी न कभी आप से मागेंगे जुबाँ से ।
हम जेलको दिल खोल के आबाद करेंगे ॥
पर याद रहे 'लाल' का कहना नहीं झूठा ।
इक रोज हमीं हिन्द को आजाद करेंगे ॥

'बर्तमान'

❋ पड़ गये ❋

(ले०—रामचन्द्र शास्त्री) ग़ज़ल

जब से है ग़ैरों के हाथो हिन्द वाले पड़ गये ।

दम नहीं निकला मगर जीने के लाले पड़ गये ॥
हो गये बरबाद जो थे ताजवाले आज सब
हाथ में हथकड़ा और मुह में ताले पड़ गये ॥
हाथ डायर ने किये फायर न आई शर्म कुछ ।
हाथ हम बेदर्द गोरों के हवाले पड़ गये ॥
सख्तियाँ हम झेलते हैं अब सितम ईजाद की ।
जुल्म के शाले से दिल में अब तो छाले पड़ गये ॥
आये जो महिमान बनकर वो लगे करने सितम ।
रोते हैं क़िस्मत को अपनी किसके पाले पड़ गये ॥
चल रहा है फूटका दौरा हमारे हिन्द में ।
किस बलामें राम अब सब हिन्दवाले पड़ गये ॥

स्वदेशी बुक डिपो, बरहज ।

मुद्रक—शिवचरन लाल गुप्त गोरखपुर ।

विज्ञापन

स्वराज्य आल्हा पहला भाग ।

जिसमें भारतीय स्वाधीनता की लड़ाई का संक्षिप्त हाल बीर छंद में बड़ी खूबी के साथ लाहौर-कांग्रेस तक हाल बर्णन है पढ़िये । बड़े २ लोगों ने इसकी तारीफ की है मूल्य एक आना मात्र । इकट्ठा के खरीदारों को मुनासिब कमीशन भी मिलता है ।

स्वराज्य आल्हा दूसरा भाग ।

लाहौर कांग्रेस के बाद की घटनाओं से लेकर दिल्ली कांग्रेस की गिरफ़्तारी तक का बर्णन बड़े जोशीले ढंग से किया गया है छप रहा है ।

सर्व साधारण को सूचना ।

आप को बिदित हो कि हर प्रकार की पुस्तकें राष्ट्रीय गायन नेताओं के लाकेट, कांग्रेस के लिये रजिस्टर झंडा वगैरः हम से खरीदें ।

पता—पं० छांगुर त्रिपाठी स्वदेशी बुकडिपो
बरहज बाजार जिला गोरखपुर ।